मधुबन ओम् शान्ति अंक 385 अगस्त 2024

पत्र-पुष्प

"दिल की सच्ची प्रीत एक प्रीतम के साथ हो तो माया कभी डिस्टर्ब नहीं करेगी"

(याद पत्र – 22-07-2024)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा प्रीत बुद्धि बन एक की लगन में मगन रहने वाली सच्ची-सच्ची प्रीतमायें, हर संकल्प, बोल और कर्म में श्रीमत को पालन करने वाली विजयी आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अगस्त मास हम सबकी अति स्नेही, परमात्म प्यार को स्वयं में समाने वाली, सच्ची-सच्ची दिलरूबा मीठी दादी प्रकाशमणि जी की स्मृतियों का मास है। वह कैसे प्रीत बुद्धि बन सदा एक बल एक भरोसे से निर्भय और शक्ति स्वरूप बन हर असम्भव को सम्भव कर नम्बरवन विजयी बन विजय माला का मणका बन गई। ऐसी मीठी दादी जी के स्मृति मास में ही रक्षाबंधन और जन्माष्टमी का भी पावन पर्व है। मीठे बापदादा ने हम सभी बच्चों को प्रतिज्ञा की ऐसी राखी बांधी है जो हम स्वयं तो मायाजीत विजयी बनते ही हैं लेकिन अपने योग की शक्ति से प्रकृति सहित पूरे विश्व को पावन बना देते हैं। राखी का यह मीठा बंधन हमें बंधनमुक्त, जीवनमुक्त बना देता है इसलिए रक्षाबंधन के तुरन्त बाद, वैकुण्ठनाथ श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव, जन्माष्टमी के रूप में धूमधाम से मनाते हैं। यह दोनों ही यादगार त्योहार विशेष ''पवित्र भव, योगी भव'' का शुभ सन्देश देते हैं। ऐसे पावन त्योहारों की आप सभी को बहुत-बहुत शुभ बधाईयां।

बाबा कहते बच्चे, यह संगमयुग खुशियों का युग है क्योंकि इस समय इस दु:खधाम को आधाकल्प के लिए विदाई मिल जाती है। जब आत्मा का कनेक्शन अपने पिता परमात्मा से जुटता है तो खुशियों की शहनाईयां बजने लगती हैं। यह खुशी की डांस नैचुरल डांस है, जो चलते फिरते हर कर्म करते होती रहती है। अभी विजयी बनने और बनाने का समय है इसलिए कोई भी कमजोरी की बातें ज्यादा सोचनी या वर्णन नहीं करनी है। जब स्वयं सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो मंजिल पर पहुंचे कि पहुंचे। वैसे भी अगर कोई कमजोर हो लेकिन साथी मजबूत हो तो सहज ही पार हो जाता है। तो जब भी कोई बात या परिस्थिति आये तो अनुभव करो कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ हजार भुजाओं वाला बाबा है। जहाँ बाप है वहाँ चाहे कितने भी तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति - इसी टाइटिल की स्मृति से विजयी बनना है। संकल्प में भी हार न हो। बोलो, ऐसा ही अनुभव करते हर पल उमंग-उत्साह में उड़ते रहते हो ना! यह उमंग-उत्साह ही अनेक प्रकार के विघ्नों को समाप्त कर देता है। उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प विजयी बनने में शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है।

अभी तो बाबा कहते बच्चे, सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी बनकर रहो। एक मेरा बाबा, दूसरा न कोई, इस बेहद के मेरे में अनेक मेरा समा दो तो विजयी बन जायेंगे।

अच्छा - आप सभी याद और सेवा का बैलेन्स रख संगमयुग की मौजों का अनुभव कर रहे होंगे! बाबा के घर में भी चारों ओर योग तपस्या की अच्छी लहर चल रही है। सभी को स्नेह सम्पन्न याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

विजयी रत्न बनना है तो प्रीत बुद्धि बनो

1) प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा अलौकिक अव्यक्त स्थिति में रहने वाले अल्लाह लोग। जिनका हर संकल्प, हर कार्य अलौकिक हो, व्यक्त देश और कर्तव्य में रहते हुए भी कमल पुष्प के समान न्यारे और एक बाप के सदा प्यारे रहना – यही है प्रीत बुद्धि बनना।

2) प्रीत बुद्धि अर्थात् विजयी। आपका स्लोगन भी है विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती और विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ती। जब यह स्लोगन दूसरों को सुनाते हो कि विनाश काले विपरीत बुद्धि मत बनो, प्रीत बुद्धि बनो तो अपने को भी देखो - हर समय प्रीत बुद्धि रहते हैं? कभी विपरीत बुद्धि तो नहीं बनते हैं?

3) प्रीत बुद्धि वाले कभी श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकते। अगर श्रीमत के विपरीत संकल्प, वचन वा कर्म होता है तो उसको प्रीत बुद्धि नहीं कहेंगे। तो चेक करो हर संकल्प वा वचन श्रीमत प्रमाण है? श्रीमत प्रमाण चलने वाले सदा विजयी रहते हैं।

4) प्रीत बुद्धि अर्थात् बुद्धि की लगन वा प्रीत एक प्रीतम के साथ सदा लगी हुई हो। जब एक के साथ सदा प्रीत है तो अन्य किसी भी व्यक्ति वा वैभवों के साथ प्रीत जुट नहीं सकती क्योंकि प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा बापदादा को अपने सम्मुख अनुभव करने वाले। ऐसे सम्मुख रहने वाले कभी विमुख नहीं हो सकते।

5) प्रीत बुद्धि वालों के मुख से, उनके दिल से सदैव यही बोल निकलेंगे –तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से सर्व सम्बन्ध निभाऊं, तुम्हीं से सर्व प्राप्ति करुं। उनके नैन, उनका मुखड़ा न बोलते हुए भी बोलता है। तो चेक करो ऐसे विनाश काले प्रीत बुद्धि बने हैं अर्थात् एक ही लगन में एकरस स्थिति वाले बने हैं?

6) जैसे सूर्य के सामने देखने से सूर्य की किरणें अवश्य आती हैं – इसी प्रकार अगर ज्ञान सूर्य बाप के सदा सम्मुख रहते हैं अर्थात् सच्ची प्रीत बुद्धि है तो ज्ञान सूर्य के सर्व गुणों की किरणें अपने में अनुभव करेंगे। ऐसे प्रीत बुद्धि बच्चों की सूरत पर अन्तर्मुखता की झलक और साथ-साथ संगमयुग के वा भविष्य के सर्व स्वमान की फलक रहती है।

7) अगर सदा यह स्मृति रहे कि इस तन का किसी भी समय विनाश हो सकता है तो यह विनाश काल स्मृति में रहने से प्रीत बुद्धि स्वत: हो ही जायेंगे। जैसे विनाश काल आता है तो अज्ञानी भी बाप को याद करने का प्रयत्न जरुर करते हैं लेकिन परिचय के बिना प्रीत जुट नहीं पाती। अगर सदा यह स्मृति में रखो कि यह अन्तिम घड़ी है, तो यह याद रहने से और कोई भी याद नहीं आयेगा।

8) जो सदा प्रीत बुद्धि हैं उनकी मन्सा में भी श्रीमत के विपरीत व्यर्थ संकल्प वा विकल्प नहीं आ सकते। ऐसे प्रीत बुद्धि रहने वाले ही विजयी रत्न बनते हैं। कहाँ भी किसी प्रकार से कोई देहधारी के साथ प्रीत न हो, नहीं तो विपरीत बुद्धि की लिस्ट में आ जायेंगे।

9) जो बच्चे प्रीत बुद्धि बन सदा प्रीत की रीति निभाते हैं उन्हें सारे विश्व के सर्व सुखों की प्राप्ति सदाकाल के लिए होती है। बापदादा ऐसे प्रीत निभाने वाले बच्चों के दिनरात गुण-गान करते हैं। अन्य सभी को मुक्तिधाम में बिठाकर प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों को विश्व का राज्य भाग्य प्राप्त कराते हैं।

10) एक बाप के साथ दिल की सच्ची प्रीत हो तो माया कभी डिस्टर्ब नहीं करेगी। उसका डिस्ट्रक्शन हो जायेगा। लेकिन अगर सच्चे दिल की प्रीत नहीं है, सिर्फ बाप का हाथ पकड़ा है, साथ नहीं लिया है तो माया द्वारा घात होता रहेगा।

11) जब मरजीवा बने, नया जन्म, नये संस्कारों को धारण किया तो पुराने संस्कार रूपी वस्त्रों से प्रीत क्यों? जो चीज़ बाप को प्रिय नहीं वह बच्चों को क्यों? इसलिए प्रीत बुद्धि बन अन्दर की कमजोरी, कमी, निर्बलता और कोमलता के पुराने खाते को सदाकाल के लिए समाप्त कर विजयी बनो। रत्नजड़ित चोले को छोड़ जड़-जड़ीभूत चोले से प्रीत नहीं रखो।

12) कई बच्चे प्रीति जुटा लेते हैं लेकिन निभाते नम्बरवार हैं। निभाने में लाइन बदली हो जाती है। लक्ष्य एक होता है लक्षण दूसरे हो जाते हैं। कोई एक सम्बन्ध में भी अगर निभाने में कमी हो गई तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं आ सकते। निभाना माना निभाना। कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे मन की, तन की या सम्पर्क की, लेकिन कोई आत्मा संकल्प में भी याद न आये, हर बात में पहले बाप ही याद आये तब कहेंगे प्रीत बुद्धि विजयी।

13) सदा यह स्मृति रहे कि हम कल्प-कल्प के विजयी हैं। अनेक बार यह पार्ट बजा चुके हैं अब सिर्फ रिपीट कर रहे हैं, इस स्मृति से क्या करें, कैसे करें, यह सब कम्पलेन खत्म हो

जायेगी और कम्पलीट बन जायेंगे। सदा डबल लाइट स्वरूप के स्मृति की समर्थी हो तो कोई भी असम्भव कार्य सम्भव हो जायेगा।

14) कई बच्चे कहते हैं बाबा आप माया के हाथ काट दो, लेकिन बाप माया के हाथ काटे तो जो काटेगा, वह पायेगा। बाप तो सब कुछ कर सकते हैं। सेकेण्ड का आर्डर है – लेकिन आपका भविष्य कैसे बनेगा? इसलिए जैसे नेपाल में छोटे बच्चों को छुरी हाथ में पकड़ाते हैं, करते खुद हैं लेकिन हाथ बच्चों का रखाते हैं। ऐसे बाप भी बच्चों को कहते बच्चे, सिर्फ हिम्मत का हाथ रखो तो बाप की मदद से मायाजीत विजयी बन जायेंगे।

15) जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रूप हो जाता है, कोई भी मुश्किल कार्य करने को भी तैयार हो जाता है। इसी रीति श्रीमत रूपी हाथ सदा अपने ऊपर अनुभव करो तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। चित्रों में भी भक्त के मस्तक पर भगवान का हाथ दिखाते हैं, तो आप बच्चों के मस्तक अर्थात् बुद्धि पर श्रीमत रूपी हाथ अगर है तो हाथ और साथ होने कारण सदा विजयी रहेंगे।

16) मैं हूँ ही कल्प पहले वाला विजयी - इस स्मृति से अपने को हिम्मतवान बनाओ। हम सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, इस स्मृति से हिम्मत आ जायेगी। अगर कभी मन में कमजोर संकल्प उत्पन्न भी हो जाए तो उसको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनो।

17) सदा विजयी रहने के लिए याद की छत्रछाया में रहो। जो सदा छत्रछाया के अन्दर रहते हैं, वे सर्व प्रकार के माया के विघ्नों से सेफ रहते हैं। उन पर किसी भी प्रकार से माया की छाया पड़ नहीं सकती। यह 5 विकार, दुश्मन के बजाए दास बनकर सेवाधारी बन जाते हैं। जैसे विष्णु के चित्र में दिखाते हैं कि सांप ही शैया और सांप ही छत्रछाया बन गये - यह है विजयी की निशानी।

18) कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो एकरस, विजयी रहेंगे, हलचल नहीं होगी। जब बाप के बन गये तो विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, इसलिए यादगार में भी विजय माला गाई और पूजी जाती है।

19) पवित्रता की सच्ची राखी बांधना अर्थात् संकल्प रूप से भी पांचों विकारों पर विजयी बनना। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो सभी व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर कर दो तब विजयी माला का मणका बन सकेंगे।

20) सदा बाप के साथ का अनुभव करते चलो तो विजयी रहेंगे क्योंकि साथ की अनुभवी आत्मा मुहब्बत में लवलीन रहती है। वह किसी के भी प्रभाव में नहीं आ सकती। सदा समर्थ बाप के संग में रहने वाली समर्थ आत्मा सदा माया को चेलेन्ज कर विजय प्राप्त कर लेती है। माया का आना, यह कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन वह अपना रूप न दिखाये तब कहेंगे विजयी।

21) सदा स्मृति रहे कि हम सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। सर्व शक्तियां हमारे शस्त्र हैं, अलंकार हैं। अलंकारधारी आत्मा सदा समर्थ वा विजयी रहेगी, वो कभी किसी परिस्थिति में डगमग नहीं होगी। सदा एक बाप दूसरा न कोई - इस स्मृति से महावीर बनो तो विजयी रहेंगे। मस्तक पर विजय का अविनाशी तिलक चमकता रहेगा।

22) अपनी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचो, तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। जब बाप सर्वशक्तिमान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पार पहुँचे कि पहुँचे। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी मजबूत है इसलिए पार हो ही जायेंगे, इस स्मृति से विजयी बनो और दूसरों को भी बनाओ।

23) जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लो तो अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। जहाँ बाप है वहाँ चाहे कितने भी तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति - इस टाइटिल की स्मृति से विजयी बनो।

24) हर पल उमंग-उत्साह बना रहे तो यही उड़ती कला का आधार है। यह उमंग कई प्रकार के आने वाले विघ्नों को समाप्त कर सम्पन्न बनने में बहुत सहयोग देता है। यह उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प विजयी बनाने में विशेष शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है, इसलिए सदा दिल में उमंग-उत्साह को वा इस उड़ती कला के साधन को कायम रखना। उमंग रहे कि मुझे बाप समान सर्व शक्तियों, सर्व गुणों, सर्व ज्ञान के खजानों में सम्पन्न होना ही है।

25) जो संकल्प लिया है उसमें दृढ़ रहना तो विजय का झण्डा लहरा जायेगा। दृढ़ संकल्प से सब सहज हो जाता है इसलिए कभी भी कमज़ोर संकल्प नहीं करना। सदा आगे बढ़ेंगे, विजयी बनेंगे – यह दृढ़ संकल्प करो। सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी बनकर रहो। एक मेरा बाबा, दूसरा न कोई, इस बेहद के मेरे में अनेक मेरा समा दो तो विजयी बन जायेंगे।

26) संगमयुग खुशियों का युग है, इस समय सर्व विघ्नों को आधाकल्प के लिए विदाई मिल जाती है इसलिए सदा याद रखो कि हम कल्प-कल्प के विजयी रत्न हैं। दिल में विजय का नगाड़ा बजता रहे। जैसे विजय की शहनाईयाँ बजती हैं, ऐसे याद द्वारा बाप से कनेक्शन जोड़ा और सदा यह शहनाईयाँ बजती रहें। अन्दर में खुशी की डांस चलती रहे।

27) सदा विजयी रहने के लिए साक्षी स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। साक्षी बन इस देह से कर्म कराओ। यह साक्षी स्थिति सहज पुरूषार्थ का अनुभव कराती है क्योंकि साक्षी स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात आ नहीं सकती। लास्ट में जब चारों ओर की हलचल होगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे।

28) अभी माया में कोई दम नहीं है। माया मरी पड़ी है, सिर्फ थोड़ा-सा रहा हुआ श्वांस चल रहा है, अब अन्तिम श्वांस पर सिर्फ निमित्त मात्र विजयी बनना है। किसी भी परिस्थिति में रहते हुए, वायुमण्डल वायब्रेशन की हलचल में सन्तुष्ट रहो तो सन्तुष्टता स्वरुप, श्रेष्ठ आत्मा विजयी रत्न के सर्टीफिकेट के अधिकारी बनती है। सन्तुष्टता का गुण निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन का अधिकारी बना देता है।

29) सदा विजय के उमंग-उत्साह में रहो। नाउम्मींदी के संस्कार न हों। कोई भी मुश्किल कार्य इतना सहज अनुभव हो जैसे कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि अनेक बार यह कर चुके हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं। कई बार की हुई को रिपीट कर रहे हैं, यह स्मृति विजयी बना देगी।

30) कभी कोई स्वभाव संस्कार को देखते यह संकल्प न आये कि पता नहीं यह परिवर्तन होगा या नहीं होगा। नाउम्मीद को सदा के लिए उम्मीद में बदल दो। निश्चय अटूट है तो विजय भी सदा है। निश्चय में जब क्यों, क्या आता है तो विजय अर्थात् प्राप्ति में भी कुछ न कुछ कमी पड़ जाती है तो सदा उम्मीदवार, सदा विजयी बनो और विजयी बनाओ।

31) सदा बाप की छत्रछाया के नीचे रहो तो माया से सेफ, सदा मौज में रहेंगे। यह पढ़ाई बहुत ऊंची है, लेकिन ऊंची पढ़ाई होते हुए भी निश्चय है कि हम विजयी हैं ही, पास हुए पड़े हैं। कल्प-कल्प की पढ़ाई है, नयी बात नहीं है इसलिए सदा मौज में रहो और दूसरों को भी मौज में रहने का सन्देश देते रहो। मन्सा महादानी बन शक्तियों का दान करते चलो तो मन के संकल्पों पर सेकण्ड में विजयी बन जायेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"योग को शक्तिशाली बनाओ, शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनो तब वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा"

(29-08-07)

हम सभी का दादी जी से इतना प्यार क्यों है? उनकी विशेषताओं को आप सभी जानते भी हो, वर्णन भी करते हो और बाबा भी दादी की विशेषता का वर्णन करते हैं। दादी सदा स्वयं भी स्वमान में रही और दूसरों को भी सम्मान दिया, चाहे छोटा हो चाहे बड़ा लेकिन दादी द्वारा उनको प्यार और सम्मान मिलने से दादी से प्यार है। तो स्वमान में जो रहेगा वह ऑटोमेटिक सबको सम्मान देगा। स्वमान में रहने से सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रहती ही है क्योंकि वो स्वयं ही अपने को एक मालिकपन की स्थिति में अनुभव करता है और उनका जो भी संकल्प होगा, जो भी वाणी के एक एक शब्द होंगे, वो जो बाबा का फरमान है उसको मानने वाले होंगे।

जैसे हमने देखा, हमारी जगतअम्बा माँ नम्बरवन क्यों बनी? हमने देखा मम्मा जब आई, शुरू में तो मम्मा को ज्ञान देने वाली, कोर्स कराने वाली मम्मा से बहुत होशियार थी। फिर भी मम्मा, मम्मा क्यों बनी? वन टू नम्बर कैसे बनी? उसका मूल आधार देखा जाये तो मम्मा का एक ही शब्द होता था कि मेरा लक्ष्य है - बाबा ने कहा और मैंने किया। इसका अर्थ है कि जो बाबा की श्रीमत है, श्रीमत देखो, सुबह से ले करके हम चेक करें, सवेरे उठने से लेके रात्रि सोने तक बाबा से हर कर्म की शिक्षा मिली हुई है। उस अनुसार मम्मा ने प्रैक्टिकल किया, बाबा ने कहा मम्मा ने किया तो नम्बर ले लिया।

फिर दादी को देखो, दादी की भी यही एम रही, जो बाबा ने कहा है वो मुझे करना है। ब्रह्माबाबा से प्यार है तो उसका रिटर्न जरुर हमको देना है। लेकिन अभी दादी से भी आप सबका प्यार है, तो जो दादी ने किया, दादी ने करके प्रैक्टिकल अपने लाइफ से दिखाया। वो करके आपको दादी को भी रिटर्न देना है, अभी डबल रिटर्न देना है। तो डबल रिटर्न देने की हिम्मत है? क्योंकि प्यार इसी को ही कहा जाता है। जिससे प्यार होता है वो जो

कहेगा उसको टाल नहीं सकते हैं। तो हमें अपने को चेक करना है कि सभी के प्रति, हमें सम्मान की वृत्ति रहती है? और अगर हम सम्मान देने वाले हैं उसकी निशानी क्या होगी, जो दादी में हम लोगों ने देखी? आप सभी अनुभवी हैं कि दादी से जो भी मिलता था, तो दादी से यह फीलिंग आती थी कि हमारी है। वो चाहे फारेनर्स हो, चाहे इण्डिया वाला हो, चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो लेकिन दादी हमारी है, यह फीलिंग आती थी। हुज्जत होती थी ना दादी के ऊपर। तो हमारी लाइफ में भी हमारी ऐसी नेचर हो जिससे हर एक समझे तो यह हमारे हैं, इतने इज़ी हैं? इतने लवली हैं? तो अपने आपको चेक करना पड़ेगा।

हमारे में छोटा बड़ा वो तो नम्बरवार होगा ही लेकिन हमारी किसी के प्रति भी निगेटिव वृत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम दूसरों को कोर्स कराते हैं कि निगेटिव को पॉजिटिव में चेन्ज करो। तो जो हम कहते हैं पहले किसके कानों में पड़ता है? पहले हमारे कानों में पड़ता है, तो हम दूसरों को सुनाते हैं माना पहले अपने को सुनाते हैं। तो यह चेकिंग अगर हमारी हो जाये, मानो कई कहते हैं कि क्या करें - इनका स्वभाव है ही ऐसा। तो बाबा ने एक बारी कहा था कि क्या यह कहना राइट है? एक है समझना और दूसरा है उसकी कमजोरी को अपने दिल में समाना। समझना और समाने में रात-दिन का फ़र्क है। अगर मानों हमारे मन में उसकी कमी समा जाती है तब तो हमारी चाल-चलन उनसे वैसे चलती है ना, लेकिन अगर उसकी खराबी हम समझते हैं कि यह गलत है, माना वो अच्छी चीज़ नहीं है, तो उस बुरी चीज़ को जानते हुए हम अपने मन में समा क्यों देते हैं? उसकी रिजल्ट क्या होगी? जैसे भोजन में अगर खराबी है और वो भूल से भी खा लेते हैं, पेट में चला जाता है तो उसका नुकसान होता है ना? तो जैसे खराब भोजन पेट में समा गया तो नुकसान होता है, ऐसे अगर उनकी खराबी मेरे मन में समा गई फिर हम उनसे जो भी एक्ट करेंगे वो उसी भावना से करेंगे क्योंकि उसके प्रति खराब भावना हमारे मन में समाई हुई है। तो हमारा उससे बोल, हमारी चाल सब उसी प्रमाण ही चलेगी।

तो किसी भी खराब चीज़ को अगर आप अपने मन में समाते हो तो उसका कारण क्या होता है? खराब चीज़ बाबा ने तो नहीं दी है, खराब जो भी कोई संस्कार कहो, संकल्प कहो, अन्दर मन में मैंने समा लिया तो वो रावण की प्रॉपर्टी है। तो जिसके दिल में, मन में रावण की प्रॉपर्टी है उसके दिल में बाबा कम्बाइण्ड कैसे रह सकता है? हम कभी-कभी यह समझते भी हैं कि यह नहीं होना चाहिए लेकिन वो सब समझते हुए भी जो नहीं होना चाहिए, नहीं करना चाहिए वो हो ही जाता है, उसका कारण क्या है? इसका सूक्ष्म कारण यही है कि कम्बाइण्ड रूप से बाबा जो हमको मदद देवे, वो मन में मदद के लिए है ही नहीं। तो बाबा की मदद न मिलने के कारण हम जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते। जिस समय कोई गलती होती है तो आत्मा कमजोर हो ही जाती है, ऐसे टाइम पर बाबा के कम्बाइण्ड स्वरूप की मदद फायदा देती है। और जब हमारे पास कम्बाइण्ड की फीलिंग ही नहीं है तो मदद कैसे मिलेगी। तब कहा कि जैसे बाबा ने डायरेक्शन दिया है कि समझो भले लेकिन दिल में समाओ नहीं क्योंकि भावना ही वो हो जाती है, समझो वो अच्छा भी करेगा, तो भी मेरे मन में यह भावना है - यह है ही ऐसे, तो हमको उसकी अच्छाई में भी बुराई की ही फीलिंग आयेगी, कुछ भी अच्छा ही नहीं लगेगा।

दादी सबको प्यारी क्यों लगती थी? दादी अगर कोई भी बात देखती थी, दादी के पास किसी की भी रिपोर्ट आ जाए लेकिन दादी मन में कभी भी नहीं रखती थी। तो ऐसे अपने को चेक करो कि हमारी हर आत्मा के प्रति ऐसी शुभ भावना है? उनके निगेटिव कर्म का, वाणी का प्रभाव हमारे मन में तो नहीं है? तो जैसे बाबा की हैण्डलिंग भी ऐसे ही रही प्यार देने की, भले निगेटिव को जानता था लेकिन वो सब जानते हुए भी बाबा की फीलिंग शुभ भावना शुभ कामना की रहती थी। ऐसे ही हम अपने को चेक करो। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं। किसी के प्रति बहुत अच्छी वृत्ति है, यह बहुत अच्छे पुरुषार्थी हैं, बहुत एक्यूरेट हैं तो हमारे वायब्रेशन उसके प्रति क्या होंगे? तो हमको कौन-सी सेवा अभी करनी चाहिए? हमको भी दादी से प्यार है तो उसका रिटर्न हम क्या देंगे? हम वाणी में आते हुए शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा करें।

अभी योग को बहुत पॉवरफुल शक्तिशाली, ज्वालामुखी बनाना है। जिसमें मन की एकदम एकाग्रता भी हो और दूसरा हर आत्मा के प्रति रहमदिल की भावना इमर्ज हो। तो ऐसे अभी हम लोग अगर ज्वालामुखी योग में बैठे हैं, तो क्या हमको हर आत्मा के प्रति अभी मैं सुख दे रही हूँ, शान्ति की फीलिंग दे रही हूँ, यह संकल्प चलेंगे या सिर्फ हम अपने योग के पॉवरफुल स्टेज में होंगे? सूर्य जब उदय होता है और किरणें देता है तो उन किरणों द्वारा कहाँ पानी को सुखाने की सेवा होती है और कहाँ पानी बरसाने की सेवा करता है, दोनों ही करता है तो क्या सूर्य मन में संकल्प करता है कि मुझे यहाँ सुखाना है, यहाँ बरसाना है? नहीं। ऑटोमेटिकली सूर्य जब उदय होता है और उनकी किरणें फैलती है तो जहाँ जो आवश्यकता है, समझो सुखाने के शक्ति की आवश्यकता है, बरसाने के शक्ति की आवश्यकता है, तो जब सूर्य की किरणें निकलती हैं उनसे स्वत: ही वो प्राप्ति होती है। तो हमको भी यह संकल्प करने की जरुरत नहीं है लेकिन हम मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर एकाग्र बुद्धि से स्थित रहें क्योंकि हम अगर एकाग्र नहीं होंगे तो हमारी निर्णय

शक्ति काम नहीं कर सकती है। हम कोई भी सही निर्णय तब कर सकेंगे जब हमारा मन बुद्धि एकदम एकाग्र हो।

तो दादी ने जो बाबा से बारह दिन की एप्लीकेशन डाली वो इसलिए कि क्योंकि अभी दादी के मन में और कुछ भी संकल्प नहीं है, जिम्मेवारी कोई भी नहीं है। सिर्फ विश्व-कल्याण की जिम्मेवारी है, एक ही संकल्प है। मन बुद्धि उसी एक सेवा में ही एकाग्र है, इसीलिए दादी ने बाबा को कहा तो मेरे को यहाँ रहाके मैं जो सेवा करूँगी वो आपके समान करूंगी। और हम लोग अभी कहते हैं बाबा हमारे साथ कम्बाइण्ड है, यह स्मृति में रखना पड़ता है लेकिन दादी के साथ बाबा कम्बाइण्ड तो क्या, लेकिन साथ में है ही है। तो वो भी पॉवर दादी की सेवा में ऑटोमेटिकली होगी। तो हम सबको अभी क्या करना है? दादी के प्यार का रिटर्न क्या देंगे? करेंगे ऐसी सेवा? एकदम ज्वालामुखी। क्योंकि योग में एक होता है मा. सर्वशक्तिवान, तो शक्तियों की अनुभूति ऑटोमेटिकली होगी। हम यह नहीं कहेंगे मेरे में सहनशक्ति है सामना करने की शक्ति नहीं है। जैसे बीज में सारे वृक्ष की सब शक्तियाँ स्वत: समाई हुई होती हैं। ऐसे हम भी बीजरूप यानि सर्वशक्तियों के बीजरूप प्रैक्टिकल रूप में होंगे तो हमारी सेवा यह हो सकती है। तो अभी यह पुरुषार्थ करना पड़ेगा। जब इन बातों में हमारा अटेन्शन चला जायेगा तो ऑटोमेटिकली हमारे दिल में शुभ भावना के सिवाए और कोई भी भावना नहीं होगी क्योंकि हमारे में संस्कारों का या वेस्ट थॉटस का टक्कर होता है लेकिन अगर हम शुभ भावना की स्टेज में रहें और मन में किसकी बुराई समाये नहीं, समझे भले लेकिन समाये नहीं तो हमारा मन और दिल शुभ रहेगा तो हमारी चलन स्वत: अच्छी रहेगी। तो क्या करेंगे हम सभी? वृत्ति से वायुमण्डल बनाओ, पहले अपना फिर सेवाकेन्द्र का, फिर विश्व का। तो दादी को रिटर्न देंगे ना! अच्छा - एवररेडी हो जाना।

प्रश्न:- दादी, बाबा ने सन्देश में कहा कि पाँच तत्वों ने दादी का स्वागत किया तो वो किस रूप से स्वागत किया?

उत्तर:- जैसे ड्रामा करते हैं तो उसमें पाँच विकारों को किस रूप में दिखाते हैं? सूक्ष्म मानव रूप में ही दिखाते हैं ना, काम क्रोध लोभ मोह... ऐसे ही यह भी प्रकृति के रूप भी मानव रूप में ही होते हैं। तो जैसे ड्रामा में पार्ट करते हैं, ऐसे प्रकृति के तत्वों ने पार्ट किया। यह तो बाबा ने दादी की स्टेज बताई कि प्रकृति भी जैसे दासी रही क्योंकि जगतजीत तब बनेंगे जब प्रकृतिजीत और मायाजीत बनेंगे। वो भी पाँच हैं वो भी पाँच हैं। इस दस शीश वाले रावण को खत्म करेंगे तभी जगतजीत बनेंगे। और दादी से कभी भी पूछते थे कि दादी आपका पुरुषार्थ कुछ चलता है, तो दादी कहती थी मुझे तो यही है कि मुझे कर्मातीत बनना ही है। कर्मातीत की ही धुन लगाती थी। तो बाबा ने एक्जाम्पुल दिखाया, दादी की जो इच्छा थी तो बाबा ने प्रकृति को दासियों के रूप में दिखाया।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"अपना अच्छा मित्र बनना है तो रियलाइजेशन के महत्व को जानो"

(15-08-06)

गुडमॉर्निंग। हमारी जैसी मॉर्निंग आज की दुनिया में किसी की नहीं होती। सवेरा होते ही माँ-बाप जगाते हैं। परमात्मा माँ के रूप में जगाता है। हम बच्चे इतने अच्छे हैं सेकेण्ड में जग जाते हैं। बार-बार नहीं कहना पड़ता है - उठो-उठो। इशारा करता है, उठो बच्ची बस आँख खुल जाती है। माँ अगर ठीक तरह से बच्चों को न जगाये तो बाप आँख दिखायेगा। बच्चों को जगाती नहीं हो। बच्चे उठेंगे, बाप को याद करेंगे तो बाप खुश होगा। ऐसे मात-पिता सारे कल्प में नहीं मिलते हैं।

आज बाबा ने कहा है बच्चे महाभारत लड़ाई लगनी है, बाम्ब्स छूटने हैं, बाढ़ें आनी हैं। यह सब समाचार अभी सुन और देख रहे हैं। बाबा ने पहले से ही सब बता दिया है। लोगों का सारा पैसा बॉम बनाने, मारने और मरने में जा रहा है। काम और क्रोध की आपस में बहुत अच्छी दोस्ती है। ये दोनों ही पूरी दुनिया को नर्क बनाने वाले हैं। लोभ और अहंकार भी साथ में है। परन्तु बाबा हमको कहते हैं, योग अग्नि, लगन की अग्नि ऐसी अन्दर से हो जो खुद योगी का अंग-अंग शीतल हो जाए, तपत बुझती जाए, औरों को अपना रंग देता जाए। लगन की अग्नि से योगी के अंग शीतल हो जाते हैं। सूर्य की किरणों से, बादल सागर से पानी खींचते और बरसाते हैं। सिर्फ सूर्य अपनी किरणें फेंकता रहे तो सृष्टि जल जाये। इसलिए किरणों से पानी खींचते हैं, फिर बरसता

है। इतना बारिस करते हैं जो ठण्डक आ जाती है, किचड़ा साफ हो जाता है, हरियाली फैल जाती है, स्वच्छ पानी मिल जाता है। हम कौन हैं, पूछो अपने आप से। बाबा कहता है आओ मेरे बच्चे, बादल आओ। मैं देखती हूँ, ऐसा नशा ही नहीं चढ़ता है कि मैं कौन हूँ!

अरे एक घण्टा तपस्या में बैठो, बुद्धि और कहीं नहीं जाये, सेवा में भी नहीं, भले कुछ खाओ नहीं। कराची में चार-चार घण्टा लगातार बैठते थे, हिलने की भी मना थी।

अभी देखो जहाँ तहाँ बीमारियों का कारण पानी है और खाने के लिए देखो शो वाली चीजें हैं, उसमें कोई ताकत नहीं है। सब कुछ झूठ है, सच तो है ही नहीं। मन में भी झूठ, सोचने और बोलने की आदत है। सच सुनना और सच सुनाना। तुम राजाई पाते हो, सच सुनते हो और सच सुनाते हो। उसके बीच में क्या सोचते हो। बीच में कोई काम भी याद आया तो झूठ मिक्स हो जाता है। मुरली सुनते अगर कोई काम याद आया, तो योगयुक्त नहीं हो, फेल। बाबा के दिल से हमको पास मार्क्स नहीं मिलेगी।

महाभारत के युद्ध का समय है, यानी सारे विश्व में लड़ाई है। कोई स्थान नहीं है जहाँ इन्सान बचने का स्थान बना सके। पर ठिकाना अगर बनाना है तो बुद्धि को ठिकाने पर लगाओ। राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी। यह करना है, यह नहीं करना है क्योंकि बुद्धि का कनेक्शन कल्याणकारी बाप के साथ है। श्रीमत में मनमत मिक्स करने की आदत नहीं है। मनुष्य मत श्रीमत को समझने नहीं देती है, बीच में टीं-टीं करती है। अरे तू सुन तो सही ना – वर्तमान समय भगवान क्या कहता है! सुनने और ग्रहण करने की शक्ति है बुद्धि में। मन शान्त रहे तो बुद्धि स्वीकार करती है। संस्कार बीच में आते हैं पर उसको बुद्धि चुप करा देती है। संस्कारों में देह-अभिमान भरा पड़ा है तो बुद्धि यह रियलाइज कराती है।

मेरी बुद्धि में मम्मा, बाबा और दीदी के सिवाए और कुछ भी नहीं है। मेरे बड़ों ने जो सिखाया है, उनके जैसा उदाहरण बनना है। जो शिक्षा मिली है उसी अनुसार चलना है। इतना बुद्धि को अच्छी तरह ठिकाने लगाना, यह अपने लिए पुण्य कर्म करना है, इसमें कमाई है बहुत। एक कदम भी हमारा कमाई बिगर न जाये। पदमापदमपति का टाइटल हमारा है। हमारे पास अथाह धन है, पहले गुणों का धन है, ज्ञान का धन है, यह धन कहाँ से आया? समय ने दिया, भगवान ने दिया। समय नहीं गँवाया, हर कदम में पदमों की कमाई जमा की है। कमाई कैसे करो, यह बाप ने सिखाया है। शिवबाबा कहता है ब्रह्मा बाबा के द्वारा इसके कर्म देख फॉलो करो।

स्थिति को अच्छा बनाके रखना - यह हमारी शान है। बिगर पूछे झुटके आवें! अपने को सीधा बैठना सिखाओ। बार-बार अन्दर प्रैक्टिकस करो क्योंकि आत्मा देह-अभिमान में इतनी फंस गयी है, जैसे कीड़ा बन गयी है। कीड़े के संग से इन्फेक्शन हो जाता है। कीड़ों की वृद्धि जल्दी होती है, ब्राह्मणों की वृद्धि देर से होती है। ब्राह्मणी वो जो भ्रमरी हो, उड़ती भी है और कीड़े को उठा के उसको अपने संग का रंग देकर चेंज कर देती है। अपने से पूछना है मेरी ड्यूटी क्या है। हर संकल्प में, कर्म में, भूँ-भूँ... मुख से कहेंगे तो असर नहीं होगा। संकल्प और कर्म का असर होगा। संकल्प शुद्ध और कल्याण वाला हो, अच्छा हो। तो वह संकल्प काम करता है। आटोमेटिक वो बदलता है, चेहरा चेन्ज होता जाता है।

सबसे अच्छा अपना मित्र बनना हो तो रियलाजेशन के महत्व को जानो। एक बार मम्मा से पूछा मैं क्या पुरुषार्थ करूं। तो मम्मा ने कहा महसूसता की शक्ति सदा अच्छी रखना। आपेही मम्मा-बाबा को बताये मेरी यह भूल हुई। मैं भी आप लोगों से पूछती रहती हूँ कि मेरी कोई भूल हो तो मुझे बताओ। मैं सुधारने चाहती हूँ अपने आपको। कभी भी यह नहीं आयेगा कि औरों की गलती है। दूसरों की गलती देखना, अपनी गलती न देखना। कोई रियलाइज कराये तो हर्ट हो जाना, (दर्द पड़ना) फिर हर्ट को हील करना - वह क्या पुरुषार्थ करेगा। देह-अभिमान वाले को कोई भी इशारा मिलेगा तो दर्द हो जायेगा। अरे, सुनते ही शक्ल चेंज क्यों होती, थैंक्स मानो जो इशारा दिया। इसमें फिर बाबा का प्यार चाहिए। हाथ छोड़ के जाने वाला नहीं चाहिए।

तो एक महसूसता की शक्ति ऐसी हो जो पता चले कि मेरे में अन्दर अब तक कौन सा कीड़ा बैठा है। काम का कीड़ा महान दुश्मन है। दृष्टि-वृत्ति कभी भी रुहानियत और ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न नहीं बनेंगी। अगर इसमें हम वंचित रह गये तो क्या भाग्य हुआ!

राजऋषि शब्द कम नहीं है। बाबा कितनी ऊंची पोजीशन में हमको देखता है। ऋषि बोलते नहीं, उनकी शक्ल ही काम करती है। टाइम आयेगा, मेरा बोलना भी कम हो जायेगा, पर बाबा ने जो सिखाया है, सुनाया है, टाइटल दिया है – आओ बच्ची बादल भरके जाओ और बरसो। बाबा ने कितना उम्मींदों का सितारा बना के सफलता का सितारा बना दिया है। बाबा के जो बोल हैं, जो उम्मींदें हैं वो साकार रूप में सब देखें। वो सफलता का सितारा बनाती है। उम्मींद उसकी है, काम उसका है, सफलता हुई पड़ी है, चिन्तन की जरूरत नहीं है। जिसके साथ हमारा कनेक्शन है उसकी कमाल देखना है। हम उसके होकर रहें, यह हमारा भाग्य है। ओम शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी की अनमोल शिक्षायें

"व्यर्थ से बचना है तो ईर्ष्या मुक्त बनो"

(विशेष कुमारियों प्रति)

1) कुमारियों के मन में कई बार जो यह संकल्प चलता कि जीवन का सौदा है, मालूम नहीं जीवन चल पायेगी या नहीं, मालूम नहीं मेरा भविष्य उज्जवल रहेगा। सोच समझकर कदम लेना चाहिए। पता नहीं जीवन का कैसा मोड़ आये... वह शादी तो क्या करनी, शादी तो बरबादी है, बाबा का बनकर रहें तो ठीक है। परन्तु पता नहीं मेरे संस्कार किस तरह के हों, दूसरे के किस तरह के हो, सर्विस में कदम रखें सफलता न मिले तो... ऐसा न हो इस दुनिया से भी जावें उस दुनिया से भी जावें! दादियाँ तो कहेंगी तुम्हें ब्रह्माकुमारी बनना है। वह तो ठीक है। ब्रह्माकुमारी तो ठीक परन्तु अपने पांव पर तो खड़ा रहना चाहिए, कोई का बोझ नहीं बनना चाहिए, मैं सेन्टर पर रहूँ, कभी कुछ चाहिए फिर मांगू..... यह तो मेरे से नहीं होगा। किसी के दान से मैं खुद की जीवन कैसे पालूँगी। दूसरे के दान से मैं रोटी खाऊं यह तो मेरे से नहीं हो सकता! मैं कमाऊंगी तो धन तो लग जायेगा... पता नहीं सेन्टर पर रहूँ, फिर आपस में न बनें, बैठकर मन खराब करूँ, इससे तो दूरबाज खुशबाज रहना ही ठीक है, कम से कम परतन्त्र तो नहीं रहूँगी, स्वतन्त्र रहना ठीक है। बाबा को ही तो याद करना है। बाबा की मुरली ही तो सुननी है, बाकी यह सर्विस में रहना, झंझटों में आना, इससे तो अपने को न्यारा रखना ही ठीक है। बाबा कहते न्यारे रहेंगे तो प्यारे बनेंगे, इससे ही आपे ही प्यारी बन जाऊंगी। अपनी शान में रहना चाहिए। आज की दुनिया में तो पैसे के सिवाए कुछ भी नहीं है, लोग भी पैसे की इज्जत करते, मैं ब्रह्माकुमारी तो बनी लेकिन पैसा होगा तो इज्जत तो मिलेगी। इसलिए कमाना ठीक है। बहुत हैं जो ऐसी भाषा बोलती हैं। मैं भी कहती हूँ – बिल्कुल ठीक है, सही बात है... लेकिन प्रवृत्ति वालों के लिए तो बाबा ने कहा है तुम दोनों को निभाओ। कुमारियों को किस मुरली में कहा, वह मुरली तो मैंने कभी सुनी नहीं है।

2) बाबा हमें कहते बच्चे गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ इज़ दी बेस्ट.. इस लाइफ के चार सब्जेक्ट हैं। तो अपने आप से पूछो - मेरी चारों ही सब्जेक्ट ठीक हैं! मेरी बुद्धि ज्ञान में रमण करती है? मेरे में नॉलेज की इतनी शक्ति है जो कोई कैसा भी प्रश्न करे मैं उसका उत्तर ठीक दे सकूँ, मैं किसी बात में स्वयं उलझी हुई तो नहीं हूँ? मुझे हर प्वाइंट को स्पष्ट करने की युक्ति आती है? फिर दूसरी सब्जेक्ट जो निरन्तर योगी की है, उस योग का आनन्द अनुभव किया है? बाबा की याद में उड़ने का, दिल, जिगर का अभ्यास है? दुनिया भूलने का अभ्यास है? अगर योग का अभ्यास हो तो अनेक प्रकार के प्रश्नों का जवाब मिल जायेगा। यह सब्जेक्ट जितनी जो पावरफुल बना सके, बनाओ। योग की मस्ती चढ़ी रहे तो कमाई ही कमाई है। जिसको मुरली से प्रीत नहीं, योग से लगन नहीं वह कोई सेवा भी लगन से नहीं कर सकते। कोई-कोई कहते हैं मैं रोज़ मुरली नहीं सुनती हूँ, नींद आ जाती है, नौकरी पर जाना होता है... मैं कहती यह मेरे बाबा की इनसल्ट है। बाबा सागर मुझे रत्न देने आता है और मैं कहती मैं रोज क्लास नहीं करती! बाकी तू जिंदा ही किसलिए हो। जो बाबा की मुरली का कदर नहीं करते वह ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं। क्लास न करना यह श्रीमत की पहली अवज्ञा है। 15 मिनट भोजन खाते और बाबा की मुरली नहीं सुनते - मैं उन्हें ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं समझती।

3) हमारी तीसरी सब्जेक्ट है - दैवीगुण। कोई कहते हैं मेरे में यह कड़ा संस्कार है... मुझे यह शब्द सुनते ही शॉक लगता... यह भी कोई जवाब है! मेरे स्वभाव में मेरा मूड आफ का स्वभाव है, ईर्ष्या का संस्कार है, देह-अभिमान है, थोड़ा जोश है, थोड़ा मोह है, पता नहीं क्या-क्या बोलते, मैं पूछती हूँ क्या यही प्रसाद मैं भगवान को चढ़ाती हूँ। इन स्वभावों की भेंट चढ़ाई खत्म हुए, बार-बार यही भेंटा चढ़ाते.. क्या इनको अपने पास रखने से सुख-शान्ति मिलेगी? तो देखना है हमारी तीसरी सब्जेक्ट दैवी संस्कारों वाली बनी है? इतना परिवर्तन आया है जो मैं उसमें भी अपनी सम्पन्न मार्क्स लूँ।

4) चौथी सब्जेक्ट है सेवा - तो हमें खुद के लिए जीना है या विश्व कल्याण के लिए जीना है? कई सोशल-वर्कर होते जो कितनी लगन से सेवा करते, अपना तन-मन-धन सब सेवा में लगा देते - जब वह इतना सेवा में दे सकते तो क्या हम अपना श्वाँस-श्वाँस सेवा में सफल नहीं कर सकते। क्या खुद के लिए श्वाँस है या बाबा की सेवा के लिए, विश्व कल्याण के लिए है? यह संकल्प, यह श्वाँस, यह समय, यह सम्पत्ति, यह जीना मेरा मेरे बाबा की सेवा के लिए है। जो इस सेवा में अपने आपका त्याग करता वही महान बनता। बाबा की सेवा में ही हमारी मौज है। मेरा भोजन है बाबा की सेवा, मेरा सेकण्ड-सेकण्ड संकल्प श्वाँस है सेवा। हमारा स्लोगन है त्याग, तपस्या और सेवा। त्याग से हमारा भाग्य बनता, तपस्या हमें कर्मातीत बनायेगी और सेवा से भविष्य ऊंच पद मिलेगा। तो हे वरदानी आत्मायें, अब खूब अच्छी तरह से सोचो, मंथन करो और मधुबन वरदान भूमि में परिवर्तन होकर जाओ। अच्छा - ओम् शान्ति।